

१॥ अथ सपिण्डी कन्यागमन विधिः ॥ गामया पलिकायां हसो पीतचूर्णेन कूंक
 सादिनावा अरुदलं कमलं दिनच्य ॥ गण्डकं कमातुं निधाय ॥ गदू पत्रिणा ज्ञान
 मयीः त्रयां दृष्टीः दनाय प्रविष्टि वितां गम्या मास्तीर्थः तस्या प्रतिहंस गूली सलीका
 पधानिकाः प्रकादनपटी पंचवर्ण विगनकं विद्या कृदा दनां वनयूगां गम्यां स
 की कृत्य ॥ गदू पत्रि निष्कृद्वय पत्रि मितां सुवर्ण निर्मितां लक्ष्मीनात्राय लघुति
 मां पंचा मृतेः स्वसमकुं ललापयित्वा क्वायय ॥ ततस्तस्या लीर्षका नक्षत्रम्
 त्रिगुणं रमकं निद्राधीनय निद्रा कललं त्वन निधाय ॥ लस्या गान्धर्वना दिवतु

को। धा. चतुःकं लं क्ता पयत् ॥ तथैव ॥ अथ न चतुःकं ॥ अथ न चतुःकं ॥ अथ न चतुःकं ॥
 लं ॥ नैर्ज्य (गधमकं लं) ॥ वीयव्यं कलकं लं ॥ पंचसकं लं वृत्तं पापं निधाय ॥
 नग ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ सकं धनं यथा ॥ धनं यवंच (गधमं मं
 ज्ञानायाः ॥ कलकं को ॥ चतुःको ॥ धनं विदुः या सकं धनं निवेदिदुः ॥ ॥ ताम्बूल-
 कमंभुत् ॥ अदलं कं कृमं ॥ दं दकं प्यं ॥ कृष्णं गन् ॥ श्रीरव ॥ दीपिका ॥ उपान ॥
 कृष्ण ॥ चामन ॥ अजन ॥ यान ॥ असन ॥ पाकल ॥ दवी ॥ लं जनलं जनादि ॥ यथा
 योग्यत ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथ न चतुःकं लं क्ता पयत् ॥ अथ न चतुःकं लं क्ता पयत् ॥

१

३३३

निमथायाग्यवत्तु निष्ठापयत् ॥ अथ न चतुःकं लं क्ता पयत् ॥ अथ न चतुःकं लं क्ता पयत् ॥
 सिंदूनादीनि ॥ अथ न चतुःकं लं क्ता पयत् ॥ ॥ तग ॥ कलं लं अथाप्यसकं धनं निधाय ॥
 अथ ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥
 वत्तु ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥
 पितुनमकं लं मं ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥
 अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥
 अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥ अथाप्यसकं धनं निधाय ॥

अ न म लु ल न ञ्ज न क न गि वे क्क का म ४ ल यां दा स्य ॥ अ निलं क ल्य ४ ॥ ॥
 त द व वा क्क न ल या दान क र्कुं श्री सूर्या या द्य २ ॥ पूर्व २ ॥ ॥ गुरु न म स्का न ॥
 त्या स ४ ॥ लं वा द्य पू जा ॥ ओ ल म य जी न ॥ ॥ त ग द व स्ना न स्त स व द न ॥ अ
 स न ॥ ॐ अ धि ने ष क य २ ॥ ॐ अ ने ना स ना य २ ॥ ॐ क न्दा य २ ॥ ॐ ना ला य २ ॥ ॐ
 य द्वा य २ ॥ ॐ य ग्रा य २ ॥ ॐ कं ल ना य २ ॥ ॐ क र्त्तु का य २ ॥ ॐ ग नू ज स ना य २ ॥
 ॐ कू र्मा स ना य २ ॥ ॥ ध्या न ॥ ॐ वि श्व रू प अ निलं द हं ल की वो मां ग सं स्ति त
 ॥ प्र वि रु क वि रु मा यं श्री व र्सा कि त व द स ॥ उ ने सा को मु रं वि प्र स्ति त व कुं

[illegible]

ॐ त्राय ॥ ॐ ज्ञानय ॥ ॐ यमाय ॥ ॐ नेत्राय ॥ ॐ वेत्राय ॥ ॐ वायवे ॥
 ॐ कवेनाय ॥ ॐ गीताय ॥ ॐ अधस ॥ ॐ कुक्षि ॥ ॐ आदित्याय ॥ ॐ
 सोमाय ॥ ॐ अंगनाय ॥ ॐ ब्रह्माय ॥ ॐ देहस्य ॥ ॐ शुक्राय ॥ ॐ लति
 स्थिताय ॥ ॐ नाहवे ॥ ॐ कंगवे ॥ ॐ जन्मने ॥ ॥ ॐ विनायकाय ॥ ॐ दुर्गाय
 ॥ ॐ वायवे ॥ ॐ दिव्या ॥ ॐ जलिया ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ तिस्रपूजा ॥ ॐ ख
 गमकीनकमनिलयवसर्पपदवीकृतगंधपूष्यनात्रीकेलहिनेत्यपचनत्र
 कलनिधय ॥ पालिखी ॐ खमादाय ॥ निजसाधुत्वाजानूत्याधनलीधुत्वा ॥ ३

दशा ॥ ॐ यभात्वं कृष्णाय नमः ॥ अन्त्यादीनसागत्र ॥ ॐ यत्कृतयानया ॥ यामम
 जन्मनिजन्मनि ॥ ॐ यद्य ॥ ॥ लाजापूष्यादतादिकंगृहीतीकृत्तिवध्या ॥ यद्यि
 दकिलीकृत्य ॥ ॐ नमः ॥ प्रमा ॥ ॐ दको ॥ ॐ तिमकुमूचनलन ॥ ययायाचगुर्दिकूष
 तिमकुलनमस्कर्वन् ॥ चगुर्वीनप्रदकिर्णकृत्य ॥ ॥ ततः ॥ सपत्नीकंब्राह्मण
 गायपयूपविष्णुपूजयत् ॥ अमूकवदाध्यायिन अमूकगणायामूकगम्य ॥
 प्राक्कलयसपत्नीकायलक्ष्मीनायायलमूर्तय ॥ दमासननमः ॥ पूष्य ॥ ॐ नव
 पादार्ध ॥ हस्तार्ध ॥ चन्दन ॥ सिन्दूर ॥ यक्षपवीत ॥ पूष्य ॥ धूप ॥ दीप ॥ पूजयित्वा ॥ वस्त्रा

लंका नातिदशात् ॥ गंगा वसुलंका नरुवितं ॥ सपत्नीकं वा प्रहं लक्ष्मीनाया
लात्मकं विचित्रं दक्षिणसिमु मोहलो ॥ जलजलकन ॥ ३ ॥ अथाच
वस्तुदवाङ्गं धातुजी सयनासनं ॥ सुवस्तु घटितं विष्णुं सदा लंका नरुयुगी ॥
चतुःका लापु राठायीपी भर्तु वस्तु चामनं ॥ सितं च लोहितं चैव पद्मवर्णं
वितानकं ॥ प्रच्छाद्य गङ्गा नत्नानि उषानं ॥ धोतनी सुधा ॥ देवाश्च नादि संलान
सुगन्धं रुलपूष्पकं ॥ कुम्भमागूत्रकपूरं ॥ कस्तूरी चन्दनादिरि ॥ धनं ॥ ४ ॥
नादिनद्याया साम्बलं चैव जनानि च ॥ सिद्धं दण्डं पापं दीपला लुघटं न च

४

२ वासीदासगृहं कथं सुमिवाध्यायसुधा ॥ गमहव

॥ ताम्रघटितपात्राणि अन्नला लुकमलुलं ॥ कांस्थला जनपात्राणि जलव्यजन
पात्रकं ॥ धान्यादि उपहानाणि अरुबी हितिलाकनं ॥ धूतकी नरुधिसिधि ॥ प
कान्नं लाजनानि च ॥ सवस्तीक सहस्रयुग्मं नुलोकमहीयत ॥ स्वर्गेन नमृत
प्राप्य ब्राह्मणविष्णुदेवता ॥ उत्सृजत ॥ ॥ ग्राह्यलाहसं कृणु हयं दशात् ॥ ॥
मां लयाददामि ॥ ॥ विष्णु रूप ब्राह्मणं लो न गत्तुं गृहीयात् ॥ उंददस्व ॥ ॥
मतायव मिलकृ ॥ ॥ दकं गृहीत्वा ॥ उं गत्तुं ॥ उं विष्णु ॥ अथ लो न वा नारु
कल्ययादि ॥ अमृक लो न स्यात्तु पितरु दृष्ट्वा अथ कर्तव्यं वा उल्लापिलुसपि

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

शुभकर्मसमिप्लिकनलश्रद्धासंगितासिद्धार्थपितुः अमृकलमर्मललाता
 हातकायवाचुनाजनितालावपापदयपूर्वकाप्राजागतसंवामानविमान
 कनलकंदुपूत्रगमनाकनवहिसहप्रवर्षतदधिकनलकोकीउनफुसह
 प्रसंवतलसहितस्वलोकिमहितत्वरदूकनषष्ठीयाजनमलुलनाशानक
 नलिबेककामः ॐ मां लया ॐ लानादिकालचतुष्टयकापितद्युतकूम
 गधूमकुलपूजितोत्सर्पुर्लपातुकान् कूलनरुकीर्षकप्रदलकापितद्युत
 पूर्णनिडातूपकूरसंयुतां हंसदूलीप्रकृतां गुरुलीर्षाधेभानिकां प्रकाद

नपटीयुतां सवितानिकां सुवर्णनिर्मितां लकीतानायलप्रमिमां अंगिनादेः
 वतां तदंगनिसफधन्यानिप्रकापतिदेवतानि कान्वर्णविशोधनदेवतः दय
 लीं उदेवतः क्रीकूम कादकपूनागत्रचन्दनान्यपूजादेवतानि कोद्रयददे
 वतः तथाच महाधकाजमागमनाशातनमागेलसुखगमनप्राप्त्यर्थं
 मां दीपिकां वक्रिदेवतां इनधनप्रदीपांगनप्रतफबालकादिदुर्गमेगमना
 लावतुनगात्रुस्वलोकिगमनप्राप्त्यर्थमिमां उपानहवृत्तानां मिनादेवतः हा
 दलादिद्यातपाहुवधमनिवातलासिपुवन्नपावालावर्षेलासहाद्यमादिदुःस

हातपनिवात्रार्थमिदं कुरु ॥ ननु देवर्षी ॥ अतस्तद्व्याख्यानं गतचामनवीर्यः ॥
 मानससूत्रं हिलाकगमनं व्याख्यानार्थं ॥ इदं चामनं कामधेनूदेवर्षी ॥ यत्तत्तत्सर्वं नि
 वासकामं ॥ इदं वासनमस्तु नो गितो देवर्षी ॥ यत्तत्तत्सदा दृष्टिदृष्टिपासादिनि
 वात्रार्थं ॥ इदं जलकं ॥ वरुणदेवर्षी ॥ पाकलाजनादीनि विष्णुकर्मदेवर्षी ॥
 यथा भक्तिगृहापस्कनालिसर्वदेवर्षी ॥ अथ श्री ॥ कंकटिका ॥ प्रसाधि
 न्यादीनि ॥ श्री गणेशपस्कनालिवनस्पतिदेवर्षी ॥ उक्तानां गितो देवर्षी ॥ वा ॥
 सिद्धं नारी देवर्षी ॥ अन्यानि यथापपन्नानि ॥ अमरकेशाया मरकेशमर्षी ॥

वाक्कलाय सपत्नी कायतुल्यमहं संप्रदद ॥ वाक्कलानुसंस्मिन्नमम ॥ वाक्कल
 मया पवित्रं ॥ सर्वदीनां ददतु ॥ ॥ दक्षिणा ॥ कर्तुं तत्तु मया दानप्रतिष्ठार्थं स्व
 लोकदक्षिणां तुल्यमहं संप्रदद ॥ यथा श्रुत्वा च न ॥ ॥ पूषा जलिमादाय वाक्क
 लप्रदक्षिणां कृत्वा पठतु ॥ श्रीविष्णु प्रतिमां कृत्वा सर्वपस्कनार्थं यथा ॥ सर्वन
 तिसमायुक्ता गवविप्रनिवदिता ॥ आत्मा ह्यं तु ॥ लिवा गोत्री ॥ अक्र ॥ सूत्रग ॥ ले ॥
 सह ॥ तस्मात्कृत्वा प्रदानेन आत्मा प्रवृत्तः प्रसीदतु ॥ ॥ अथ नन पूषा जलिं विप्र
 दाक्षिणां नमस्तु ॥ यथा भक्तिदक्षिणां दद्यात् ॥ इति मया दानविधिः समाप्तः ॥

१ अथ (ग) द नै ॥ अमृक (ग) ग्रामृक नामा मृक कार्य समप्रतत्वं वाद क पत्र डाता
नामाग्रतन विद्वि यज न्यादि पात कानां अथ न निना सन द्वा ग्रीह व्याधि विद्वतः
(ग) लोको वा फ यः ॥ म म हं ग ग्रीह्या खूनी व सु ल क नै कां स्थ दा ह नां ता सु पृ षी
मृकाला मूल रू वि तां ॥ मां गी नू द देव तां अमृक हर्म (ल) वा कृ ण यः ॥ द दि ण ॥
कृ पा पा न हा द नै ॥ अमृक (ग) ग्रामृक नामा मृक कार्य समप्रतत्वं वाद क पत्र डाता
नामाग्रतन विद्वि यज न्यादि पात कानां अथ न निना सन द्वा ग्रीह व्याधि विद्वतः
त ह दू री सं त त लार्थ मि म उ पा न हा वृ त्त नां गि ना दे व त च पी ठि कां वि षू दे

व ता च ऊ ल पा णं व त्रु ण दे व तं अमृक हर्म (ल) वा कृ ण यः ॥ द दि ण ॥ ॥ पूजा
र जा लं ग न्ने या त वि यः ॥ अमृक (ग) ग्रामृक नामा मृक कार्य समप्रतत्वं वाद क पत्र डाता
नामाग्रतन विद्वि यज न्यादि पात कानां अथ न निना सन द्वा ग्रीह व्याधि विद्वतः
व मि लि त नि य पू जा प क त लं ग्री ३ स्त द व ता सु प्री त यः ॥ ग्री ३ व स म
पे या मि न मः ॥ द दि ण ॥ ॥ आ ग्री वा द वि यः ॥ ॥ शु कृ ण नि हा म या वा क ॥
अमृक (ग) ग्रामृक नामा मृक कार्य समप्रतत्वं वाद क पत्र डाता
नामाग्रतन विद्वि यज न्यादि पात कानां अथ न निना सन द्वा ग्रीह व्याधि विद्वतः
यु ४ सि ष्ठ र्थ च ग्री ग (ल) वा कृ ण यः ॥ द दि ण ॥ ॥ शु कृ ण नि हा म या वा क ॥

कनिष्ठा ॥ ॥ मत्स्यपुराणे ॥ यावद्वर्तुगुणोदशादुदकैर्लविमत्स्यगणपुगायाप्रसमाय
 कंशंभमधरुलैलरुत ॥ कुलकैर्दानी ॥ अमृकगणप्रसापिपुत्रमृकनाभ्राभ्रशपि
 वृगगात्रहत्रहत्रशोपकिमिस्वगताधमधयहृजंन्यरुलसमरुलप्राफिकाभाऽथा
 दिपिपुमत्रनदिनावधिकाऽतोवावहृन्निदिनानवसर्गयावत्प्रयहृजमृकगणप्रय
 अमृकनाममर्मलाडाज्जग ॥ यसान्नादककृगनिवदूदीदेवगानिदागुमहमृत्त
 ऊ ॥ दक्षिणा ॥ ॥ यंवक्ष्वेदंनविदीवदन्तिपरंपुराणंयून्यंनथाय ॥
 विन्यर्गककानलविन्यनंवातस्मै नभाविन्नविनायकायः ॥ १ ॥ शुभ